गंगा की व्यथा

जीवन का आधार हूं मैं
भागीरथ की पुकार हूं मैं
मोक्ष का द्वार हूं मैं
तेरे पूर्वजों का उपहार हूं मैं
तेरा आज, तेरा कल हूं मैं
तुझ पर ममता का आंचल हूं मैं
हर युग की कथा हूं मैं
विचलित व्यथित व्यथा हूं मैं
तेरी मां हूं मैं, गंगा हूं मैं|

अनादि अनंत काल से
हिमगिरी से बह रही
तेरी हर पीढ़ी को
अपने पानी से सींच रही
मेरी धारा पर गर्वित धरा
धन-धान्य से फूल रही
विडंबना है यह कैसी?
यह धरा ही मुझको भूल रही
क्षुब्धाएं सो रही है, विश्वास रो रहा है
प्रणय विकल रहा है, मेरा हृदय रो रहा है
तेरी क्षुधा का श्रोत हूं मैं
प्रणय का प्रकोष हूं मैं
मेरी मासूम बूंदो का रोष हूं मैं
तेरी मां हूं मैं, गंगा हूं मैं|

असहाय हूं मैं,लाचार हूं
सदियों से शोषण का शिकार हूं
अब तो थोडी सी अपनी उदारता का प्रमाण दो
मेरी इस दशा को थोडा तो सुधार दो
तेरे संस्कारो का क्षंगार हूं मैं
तेरी संस्कृति की गरिमा हूं मैं
तेरी मां हूं मैं, गंगा हूं मैं.... गंगा |

-- Tinku Singhal

Contact Details
Tinku Singhal
Senior B.Tech Undergraduate
Biological Sciences and Bioengg.
IIT Kanpur
Email : tinku@iitk.ac.in
Mobile No: 9794171178